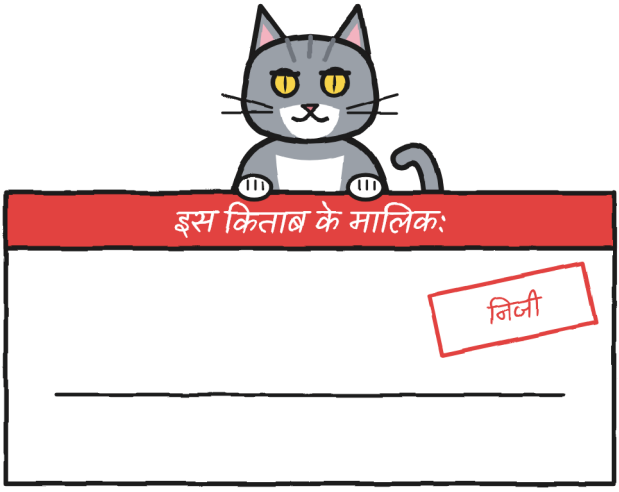


और किसी और की नहीं। –ज.

अगर यह तुम्हें मिल जाए, तो बादल गरजने से पहले मत खोलना।

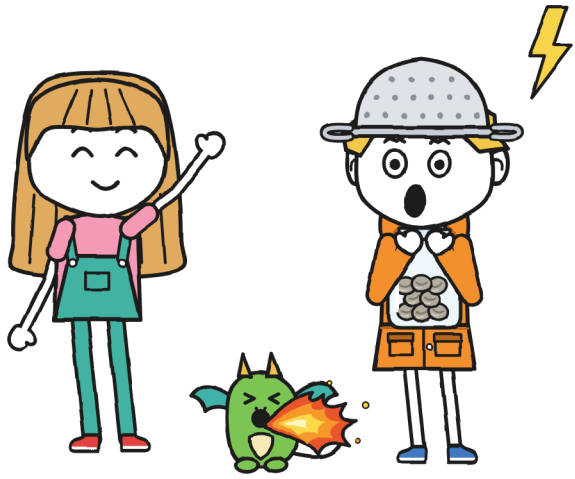
सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर उसे चिह्नित करती है जो सिर्फ़ कहानी में होता है: तुम इसे मत करना। अगर वह कई पन्नों तक चले, तो "यहाँ से" और "यहाँ तक" लिखा होता है। असली तूफ़ान हो, तो आख़िरी पेज देखो। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी · 2

बादल गरजने से पहले न खोलें

Lui Eriksson



साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

नामुमकिन डिलीवरी · 2
बादल गरजने से पहले न खोलें

सीरीज़ की दूसरी किताब। पहली: “यह पार्सल काटता है”।

लेखन और चित्र: Lui Eriksson

हिन्दी संस्करण: LinguAula

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

पहला संस्करण: 2026

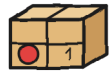
© 2026 Lui Eriksson · info@linguaula.com

कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

फ़ॉन्ट: Andika, Patrick Hand, Caveat, Courier Prime, Kalam, Dekko और Hind (SIL OFL लाइसेंस)।

हर अध्याय का अभ्यास
linguaula.com *पर करो*

इस किताब को लिखने के दौरान किसी भी गरज को चोट नहीं पहुँची।
—ज.



अध्याय 1

तूफ़ान का शिकारी

सामने वाली दुकान में एक पार्सल काँप रहा है।

पिछले शनिवार वह सिर्फ़ एक बार हिला था। तब से रुका नहीं है: एक बारीक, लगातार थरथराहट, जैसे जानवरों के डॉक्टर के इंतज़ार-कमरे में बैठा कोई छोटा-सा कुत्ता काँपता है। सात दिन हो गए। हर दिन थोड़ा और ज़्यादा।

और मेरे पास नई डायरी है।

डायरी नंबर 1 मेरी भर गई। नामुमकिन डिलीवरी की मालकिन मारा ने मुझे यह दूसरी दी: नीला कवर, और एक कोने में दुकान की लाल मुहर। पहले पन्ने पर मैंने शीर्षक लिखा, एक नए शब्द के साथ:

डिलीवरी डायरी 2 · गुनी की। ऑफ़िशियल।

"ऑफ़िशियल" का मतलब है कि इसे पहले मैं पढ़ूँगी। ऑफ़िशियली। —ज.

मारा कहती हैं कि ऑफ़िशियल डायरियों में चित्र नहीं बनाए जाते। देखते हैं: इसमें तो अभी से एक चित्र है।

पिछली डायरी के बारे में जो जानना ज़रूरी है: दो शनिवार पहले जूलिता (हरे नोटों वाली) और मैंने रात को, एक पैदल पुल से, बिना किसी बड़े के, एक ऐसा अंडा पहुँचाया था जिसे बरसों से कोई नहीं पहुँचा पाया था। अब वह चूरा है, ड्रैगन की एक बच्ची, जो मेरी

हर बात की नक़ल उतारती है। दुकान की जादूगरनी मारा ने हमें सज़ा दी: हर शनिवार वहाँ, दस बजे। मैं मोहल्ले में नया हूँ, और मेरा लगभग सारा सामान अब भी डिब्बों में है।

जो काँप रहा है, वह नं. 2 है। वह वापस आए पार्सलों की शेल्फ़ पर रखा है, और उस पर एक लेबल लगा है जो मुझे ज़बानी याद है: इस हफ़्ते हर शाम मैंने उसे पढ़ा है, खड़े-खड़े और बिना छुए, जबकि मारा ऐसा दिखाती रहीं जैसे उन्होंने मुझे देखा ही नहीं।

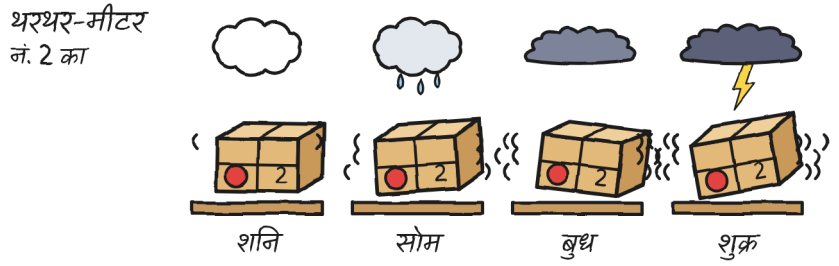
- नं. 2 · नाज़ुक।
- गंतव्य: फ़्लोरा, नहर वाली सड़क, 9।
- निर्देश: बादल गरजने से पहले न खोलें।
- प्रेषक: R.

चारों ओर “वापस आया” की तेईस मुहरें। मैंने उन्हें दो बार गिना, कि कहीं कोई गिर न गया हो।

वापस आया पार्सल वह होता है जिसे कोई पहुँचा नहीं पाया: अगर पाने वाला उस पर कभी न मिटने वाली स्याही से दस्तख़त न करे, तो सुबह होते ही वह उड़कर अपनी शेल्फ़ पर लौट आता है, क़तार में, बत्तखों की तरह। उन्नीस बाक़ी हैं: यह दीवार पर लिखा है, हरे रंग में, जूलिता की लिखावट में, और जूलिता जो हरे रंग से लिखती है वह मिटता नहीं। उन सबको एक ही व्यक्ति ने भेजा है: R., जिसके बारे में बस इतना पता है कि उसकी लिखावट बहुत ख़राब है।

हर शाम मैं लिखता था कि वह कितना काँपा और मौसम कैसा था: इसी से बना “नं. 2 का थरथर-मीटर”। शुक्रवार को बादल अपने अंदर बिजली लिए हुए था।

यह डर से नहीं काँप रहा: तूफ़ान आने वाला है, शनिवार को, शाम छह बजे। मौसम की ख़बर में छह बार देखा है। —ज.



मैंने नोट दो बार पढ़ा। दूसरी बार सिर्फ़ छह वाला हिस्सा।



शनिवार को, दस बजे, मारा (बैंगनी टोपी, और चिंगारियाँ छोड़ने वाली मुहर, जिससे बुझी मोमबत्ती की महक आती है) काउंटर के पीछे नं. 2 को हाथों में लिए हमारा इंतज़ार कर रही थीं। शेल्फ़ पर नहीं: हाथों में। मुहर के पास रबर का मेंढक पड़ा था, जो उस दिन से मेरा है जब से वह किसी का नहीं रहा। और टोन्यो, "बिजली" का डिलीवरी बॉय, हेलमेट पहने खड़ा था: शनिवार उसकी भी सज़ा के दिन हैं, और टोन्यो सज़ा वैसे ही निभाता है जैसे डिलीवरी करता है, वक़्त पर और बिना कुछ उतारे।

"तेईस बार मैं इसे ख़ुद लेकर गई हूँ," मारा ने कहा। "और एक बार भी तूफ़ान में नहीं।"

मारा ने अँगूठे से लेबल को सहलाया। मैंने दुकान की खिड़की की ओर देखा, जो और स्लेटी होती जा रही थी: आज का सफ़र पहले जैसा नहीं होने वाला था।

"यह वाला," मारा ने ऐलान किया, "तुम लोग पहुँचाओगे। आज शाम को।"

जूलिता इतनी ऊँची उछली कि "बाक़ी 19" वाले बोर्ड को लगभग छू ही लिया, और ज़मीन पर आते-आते बोलना शुरू कर चुकी थी। मैं नहीं उछला: मैं दो शब्दों पर अटका रह गया, "आज शाम", और एक वक़्त पर, छह बजे, जो मुझे पार्सल से ज़्यादा भारी लग रहे थे।



मारा ने तीन शर्तें रखीं, और उन्हें उँगलियों पर गिनाया:

1. तुम लोग पाँच बजे निकलोगे, तूफ़ान आने से पहले, और जब तक वह गुज़र न जाए, फ़्लोरा के घर पर रहोगे।
2. तुम्हारे घर वालों को पता है, और फ़्लोरा को भी।
3. नियम वही है जो लेबल पर लिखा है: बादल गरजने से पहले नहीं खोलना। और गरज ठीक सिर के ऊपर वाली होनी चाहिए: दूर वाली गरज नहीं चलेगी।

मैं यह तरकीब पहचान गया: ये लगभग वही नियम थे जो वेरा ने डाँटते हुए बताए थे, चूरा की देखभाल करने वाली वेरा ने, बस डाँट के बाद की जगह पहले कह दिए गए थे। मारा डाँट के वक़्त वहाँ नहीं थीं, फिर भी उन्हें पता चल गया: इस मोहल्ले में डाँटें पार्सलों से पहले पहुँच जाती हैं।

“और आप नहीं आ रहीं?” जूलिता ने पूछा।

“मुझे यहाँ कुछ काम हैं,” मारा ने कहा, और दुकान की खिड़की से बाहर आसमान को देखा, जो स्लेटी होता जा रहा था।

काउंटर के आख़िरी सिरे पर एक तह किया हुआ कंबल रखा था, स्कीइंग वाले ईयरमफ़ और एक पतीला। मैंने सब देखा। फिर मैं पार्सल को देखता रह गया।

तभी जूलिता ने मेरी तरफ़ देखा।

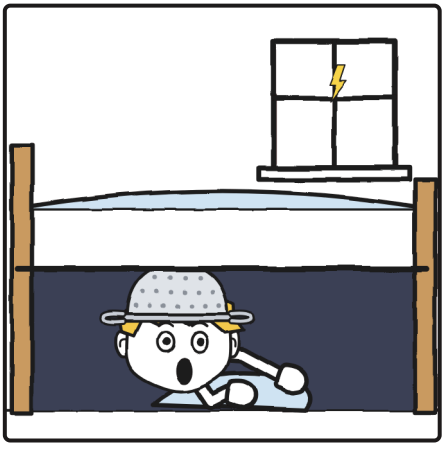
“तुम्हें तूफ़ान पसंद हैं?”

उसने सीधे मेरी आँखों में देखकर पूछा। मैं सच कह सकता था। मैंने यह कहा:

“बहुत पसंद हैं। अपने पुराने मोहल्ले में मैं प्रोफेशनल तूफ़ान का शिकारी था।”

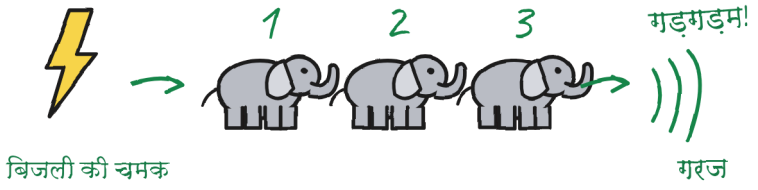
पिछली डायरी में एक झूठ को लौटने में एक दिन और एक रात लगी थी। इस बार मैंने उसका रास्ता छोटा कर दिया: उसी सुबह झूठ का चित्र बनाया और, बगल वाले खाने में, सच का।





छलनी रसोई वाली थी, स्टील की, दो हत्थों वाली। वह बिजली को नहीं रोकती थी। मेरी मदद इस बात से होती थी कि सिर पर कुछ रखा हो। अब वह शिफ़्टिंग वाले किसी डिब्बे में कहीं पड़ी थी, उन कैंचियों के पास जिन्हें मेरी मम्मी एक हफ़्ते से ढूँढ रही थीं।

जूलिता ने मुझे तूफ़ान गिनना सिखाया: मेरी डायरी में, बिना पूछे और हरे रंग से।



एक हाथी, दो हाथी, तीन हाथी...

1 हाथी = 1 सेकंड

3 हाथी = 1 किलोमीटर (लगभग)

0 हाथी = ठीक ऊपर!

↖ यह लेबल वाली गरज है।
दूर वाली गरज पार्सल नहीं खोलती।

ज़्यादा हाथी: वह बिजली और दूर गिरी।

अगर तुम्हें गरज सुनाई दे, चाहे दूर ही क्यों न हो: अंदर चलो!

गिनती बिजली की चमक से लेकर गरज तक होती है, हाथियों में: "एक हाथी" लगभग एक सेकंड का होता है, और हर तीन हाथी एक किलोमीटर के बराबर। इससे मोटे तौर पर पता चल जाता है कि वह बिजली कितनी दूर गिरी; अगली कहाँ गिरेगी, यह नहीं पता चलता। और गिनती यह भी नहीं बताती कि बाहर कब निकला जा सकता है, और वह, जूलिता के अनुसार, एक दूसरा नियम है, बिना चित्र का: आख़िरी गरज के आधा घंटा बाद।

मैंने धीमे से ख़ुद गिनकर देखा, और मेरे हाथी बहुत तेज़ भागे, उस तरह के जो किसी काम के नहीं होते। मुझे कुछ गिनने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि मुझे तो तूफ़ान बहुत पसंद हैं, फिर भी मैंने लिख लिया, कहीं काम आ जाए।

टोन्यो ने मेरे कंधे के ऊपर से लेबल पढ़ा, जैसे वह हर उस चीज़ को पढ़ता है जो उसकी नहीं होती।

“‘बिजली’ तूफ़ान में डिलीवरी नहीं करती,” उसने कहा, और अपने पीले बैग पर छपे छोटे अक्षर हमें दिखाए: बिजली डिलीवरी · दस मिनट में या मुफ़्त और, जूलिता के आतशी शीशे से, एक तारा: *तूफ़ान को छोड़कर।

“अभी तूफ़ान नहीं है,” जूलिता ने कहा।

टोन्यो ने छोटे अक्षर दोबारा पढ़े, कि कहीं “अभी” के बारे में कुछ लिखा हो। कुछ नहीं लिखा था।

तो टोन्यो हमारे साथ आया। वह हाथी एक झटके में गिनता है, “एकदोतीन!”, जैसे वे कोई डिलीवरी हों। टोन्यो के हिसाब से हर तूफ़ान एक किलोमीटर दूर होता है। मुझे नहीं पता कि यह बहादुरी है या हाथियों की कमी।



पाँच बजे मैं रेनकोट लेने सड़क पार करके अपने घर गया; जूलिता नीचे गेट पर मेरा इंतज़ार करती रही। मम्मी फ़्लैट के दरवाज़े पर रेनकोट हाथ में लटकाए मेरा इंतज़ार कर रही थीं। नारंगी रंग के बारे में उनकी एक थ्योरी है: कि वह दूर से दिखता है। मुझे आज तक नहीं पता चला कि वे कहाँ से देखने की सोचती हैं।

“नारंगी वाला पहन लो,” उन्होंने कहा। “पक्का जाना है? तुम तो जब बादल गरजते हैं...”

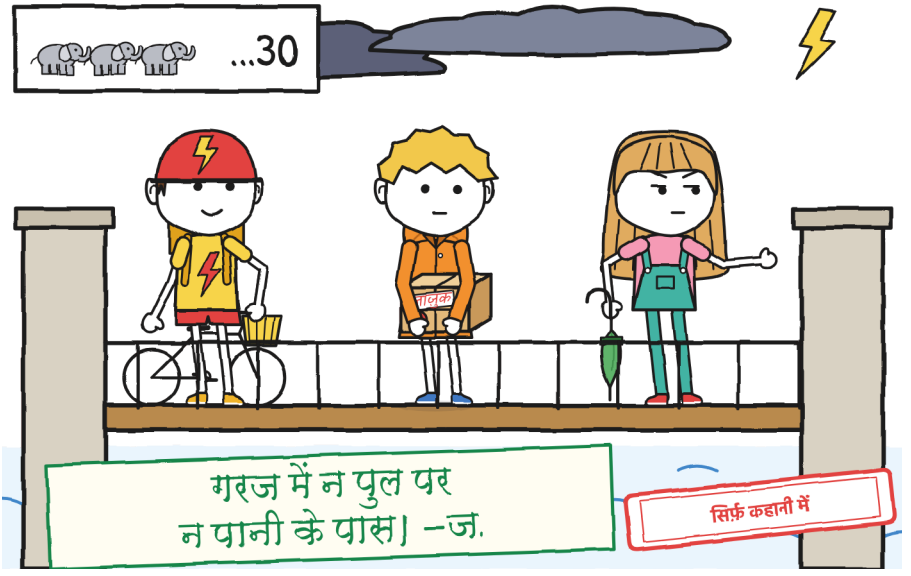
“बाय, मम्मी!”

मैं सीढ़ियाँ दो-दो करके उतर गया। मैंने हिसाब लगाया था कि सीढ़ियों की गूँज में मम्मी का आधा वाक्य रास्ते में खो जाएगा। नहीं खोया। जूलिता नीचे थी।

“तुम तो जब बादल गरजते हैं...” क्या? –ज.

हमने बड़ा पुल पार किया, आसमान और काला होता जा रहा था। रात को उसे जहाज़ों के लिए उठा देते हैं; दिन में उसे सब पार करते हैं, और उस वक़्त उसे सिर्फ़ हम पार कर रहे थे, और उलटी दिशा में जाता एक जल्दी में आदमी, जो तूफ़ान आने पर सही दिशा है। मैंने नं. 2 को दोनों हाथों से, बिल्कुल सीधा पकड़ रखा था। टोन्यो साइकिल को धकेल रहा था: खोए बिना "बिजली" को इतना धीमे चलते मैंने कभी नहीं देखा।

बीच में पहुँचकर जूलिता ने पानी की ओर अपना रुखा-सा सलाम किया, हाथ से, छोटा-सा, बिना मुस्कुराए, जैसे किसी ऐसे को जो उसे पसंद नहीं। वह उस रात से ऐसा करती है जब हम पैदल पुल पर थे। मुझे लगता है यही सौदा है: वह सलाम करती है और पानी उसे गुज़रने देता है।



बहुत दूर, आसमान चमक उठा।

वह बादलों के पीछे एक झपक थी, बिना आवाज़ की, जैसे कोई उस कमरे की बत्ती जला-बुझा रहा हो जिसमें तुम नहीं हो। जूलिता झटके से रुक गई और आँखें बंद करके

धीमी आवाज़ में हाथी गिनने लगी। कुछ सुनाई देने से पहले उसने तीस गिने। मैंने उसके साथ मन-ही-मन गिना, अपने बहुत तेज़ हाथियों से, और मेरे बयालीस निकले।

गड़गड़म।

“लगभग दस किलोमीटर दूर गिरी वह बिजली,” उसने अंदाज़ा लगाया। “मौसम की ख़बर में तूफ़ान छह बजे के लिए बताया है।”

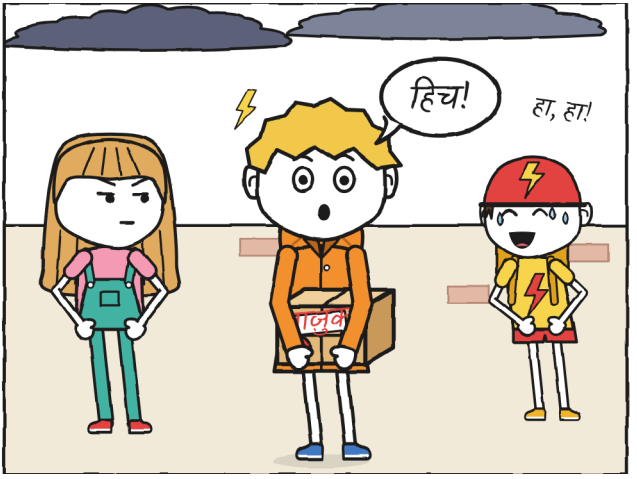
“बादल गरजा!” टोन्यो चिल्लाया। “अब खोल सकते हैं?”

“पार्सल खोलने के लिए वह गरज नहीं चलेगी,” जूलिता ने आँखें बंद किए ही कहा। “वह दस किलोमीटर दूर है; लेबल वाली गरज वह है जो ठीक सिर के ऊपर हो: शून्य हाथी। पर अब आवाज़ तो आ रही है: अंदर चलो! भागो!”

मैं नहर वाली सड़क तक भागा, ऐसे दिखाते हुए जैसे मैंने कुछ सुना ही नहीं। न गड़गड़म, न छह वाली बात।

“क्या यह हिच थी?” जूलिता ने रफ़्तार धीमी किए बिना पूछा।

“नहीं,” मैंने कहा। “हिच!”



टोन्यो साइकिल के हैंडल पर दोहरा हो गया और इतना हँसा कि साइकिल एक तरफ़ फिसल गई। जूलिता नहीं हँसी। उसने आँखें सिकोड़ लीं, जैसे वह तब करती है जब कुछ ऐसा पढ़ रही हो जो लिखा नहीं है।

एक गरज, एक हिच: यह मुझे बचपन से होता है। अगर तूफ़ान दूर है, तो वह अपने तक रह जाती है; अगर सिर पर है, तो एक और आती है, और एक और, हर तीन सेकंड में, जब तक तूफ़ान चला न जाए। यह डर नहीं है। यह मेरा शरीर मुझसे पूछे बिना करता है, जैसे बड़ा होना या छींकना, और बड़े होने की तरह यह किसी भी तरह का चेहरा बनाने से नहीं रुकता। मुझे पता है, क्योंकि मैंने सारे चेहरे आज़माए हैं।

इसे डर कहते हैं। —ज.

नहर वाली सड़क पर वेरा, लाल बालों वाली, ड्रैगनों के घर के दरवाज़े पर पहले से हमारा इंतज़ार कर रही थीं, जो फ़्लोरा के घर से सटा है, चूरा को गोद में लिए। चूरा ने मुझे देखते ही मेरा चेहरा बना लिया: वह हमेशा ऐसा करती है, एक पल मुझे देखती है, जाँचती है कि मैंने कौन-सा चेहरा पहन रखा है और वही पहन लेती है।

मैंने नं. 2 को टोन्यो की साइकिल की टोकरी में रखा और बाँहें खोल दीं।

“यह उसका पहला तूफ़ान है,” वेरा ने कहा और उसे मेरी बाँहों में दे दिया। “यह तुम्हारी हर बात की नक़ल उतारती है, गुनी। जो तुम महसूस करते हो, उसकी भी। अगर यह डर जाए, तो इसे खींचना मत: यह पकड़ लेती है। तूफ़ान गुज़र जाए, तो फ़्लोरा के आँगन की दीवार पर तीन बार थपथपाना, मैं इसे लेने आ जाऊँगी।”

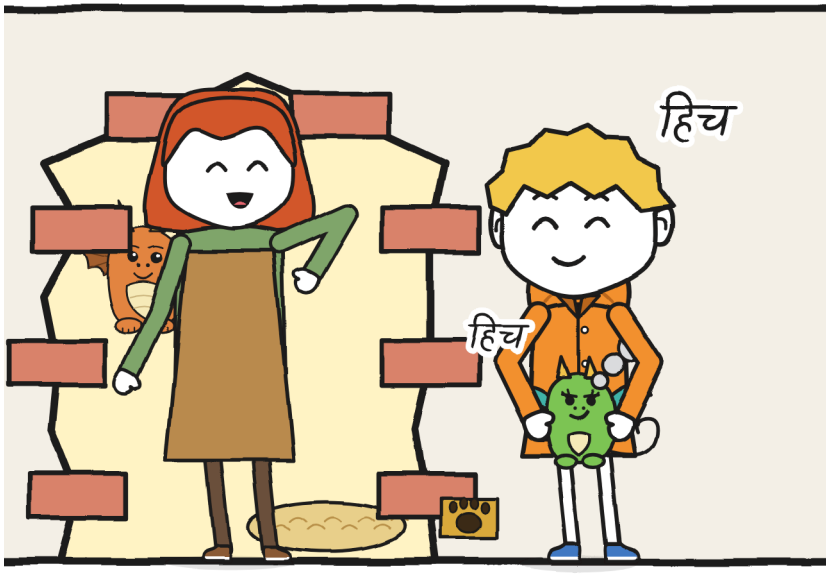
“मुझे कुछ महसूस नहीं होता,” मैंने जवाब दिया। “मुझे तूफ़ान बहुत पसंद हैं।”

मैंने यह सीना तानकर कहा, और चूरा ने मेरी बाँहों में बिल्कुल वैसे ही सीना तान लिया, गर्दन खींचकर: जिसे तूफ़ान बहुत पसंद हों, उसकी हूबहू तस्वीर, दो साइज़ में। वेरा ने हम दोनों को देखा, एक के ऊपर एक, एक ही चेहरे के साथ, और कुछ नहीं बोलीं। वेरा बातें तब के लिए बचा रखती हैं जब उनकी ज़रूरत पड़े।

दूर कहीं बादल गरजा। मैंने हिच किया। चूरा ने हिच किया, और उसकी नाक से धुआँ निकला।

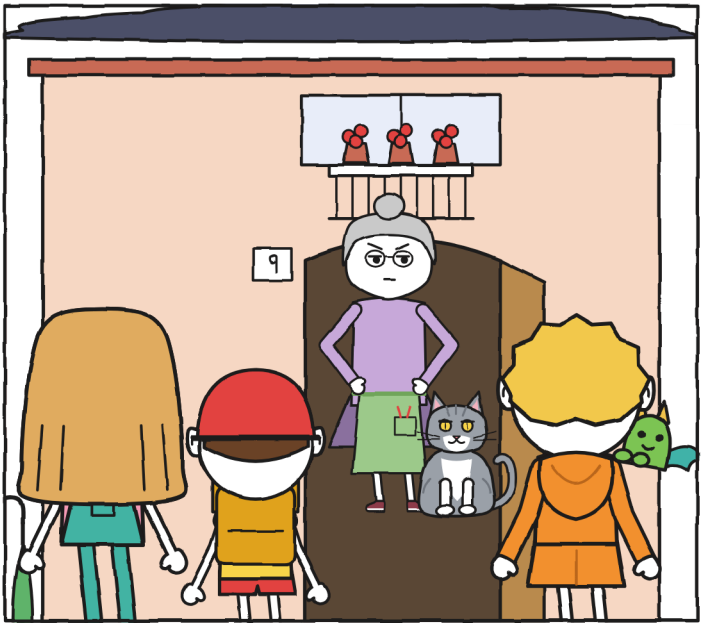
“अंदर चलो, अभी!” वेरा ने बात काटी और हमें फ़्लोरा के दरवाज़े की ओर धकेल दिया।

फ़्लोरा का घर गमलों वाला घर है, उस बालकनी वाला जिससे दो शनिवार पहले एक आंटी ने हमें देखा था, हवा में पानी का मग उठाए।



उन्होंने हमारे दस्तक देने से पहले ही दरवाज़ा खोल दिया: सलेटी जूड़े और चश्मे वाली एक महिला, बाग़बान वाला हरा एप्रन पहने जिसमें ढेरों जेबें थीं, और उनके पैरों के बीच सफ़ेद सीने वाला एक सलेटी बिल्ला, जिसने हमें ऐसे देखा जैसे किसी ऐसे पार्सल को देखा जाता है जो उसके लिए नहीं था। उन्होंने डिब्बे को देखा। आसमान को देखा। चूरा को देखा। इसी क्रम में, और हर चीज़ को उतना ही समय दिया, जो बहुत कम था।

“वेरा की बच्ची से कहना कि मेरे फ़र्न न झुलसाए,” उन्होंने कहा। “अंदर आओ, पानी आ रहा है। पर पहले बता दूँ: मैं पत्थरों पर दस्तख़त नहीं करती।”



एक कहानी, छह साइज़

यह किताब छह साइज़ में, 3 से 16 साल तक के लिए, और 20 से ज़्यादा भाषाओं में मिलती है। XXS, XS, S, M और L कहानी को पन्ना-दर-पन्ना, उन्हीं चित्रों के साथ सुनाती हैं, हर बार थोड़े और ब्योरों के साथ; XL उपन्यास है: वही कहानी, बस उसमें वह सब कहने की जगह है जो गुनी सोचता तो है, पर कहता नहीं।

CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं। XXS: pre-A1 · XS: A1 · S: A2 · M: B1 · L: B2 · XL: B2–C1।

हर कोई अपने साइज़ में। तूफ़ान वही। —ज.

परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com *पर करो (L साइज़ की गतिविधियों के साथ)*